20. सत्याग्रहाश्रमः

महात्मा गांधी ने साबरमती नदी के किनारे सत्याग्रह आश्रम का निर्माण किया। यहाँ सभी आश्रमवासी सत्य का पालन करते हुए देश की रक्षा में संलग्न रहते थे। महात्मा गांधी पिता के समान सबका पालन करते थे। यह पाठ पण्डिता क्षमाराव द्वारा रचित सत्याग्रह-गीता नामक ग्रंथ से उद्धृत है।

ततस्तीरे ..... सानुयात्रिकः महात्मा=महात्मा ने **स्थापयामास**=स्थापित किया, **सानुयात्रिकैः**=अनुयायियों के =सह, **नाम्ना सत्याग्रहाश्रमः**=नाम से सत्याग्रह आश्रम, **सदनं**=भवन को, कहाँ स्थापित किया, **सबर्मत्याः तीरे**=सबरमती नदी के किनारे पर।

सत्यमेव.....सा आश्रमः मनः=मन, **वाक्**=,वाणी, **काय**=शरीर के **कर्मभिः**=कर्मों द्वारा, वहाँ सत्यमेव, **प्रमाणम्**=सत्य ही प्रमाण था, **तस्मिन्**=उस, **पुण्यनिवासे**=पुण्य भवन में, अतः वह आश्रम, **यथार्थ**= यथा नाम तथा अर्थ वाला था।

निर्ममो..... आश्रमवासिनाम् : वह ममत्व हीन, **नित्यसत्त्वस्थः**=नित्य सत्त्व गुण में स्थित, सद्भावनाओं से पूर्ण, **मिताशी**=थोड़ा खाने वाला, **सुस्मितम् आननं यस्य सः**=सर्वदा मुस्कुराते हुए मुख वाला, **सुकलत्रः**=सु कलत्र-पत्नी वाला, **शिशुप्रेमी**=शिशुओं के प्रिय, **आश्रमवासिनां पिता=वह** आश्रमवासियों के पिता के समान थे।

ध्यायन् ..... यथा। स्वबन्धूनां=अपने बंधुओं में, **तद्धितैकपरयाणः**=उनके हित में ही लगे हुए, **क्लेशान् ध्यायन्**=कष्टों का ध्यान करते हुए, **मुनिः विराजते**=ऐसे ही विराजते थे, **यथा**=जैसे, **बोधिद्रुमुतले बुद्धः**=बोधि वृक्ष के नीचे स्थित बुद्ध भगवान्।

बलं सर्वबलेभ्यो..... सत्यवर्जितात् सर्वबलेभ्यः अपि=सभी बलों से भी, **सत्यबलं**=सत्य का बल, **अतिरिच्यते**=बढ़कर है। **अबलः**=निर्बल परंतु सत्यवान्, **सत्य से युक्त नरः सत्यवर्जितात्**=सत्य से रहित, **सबलात्**=बलशाली मनुष्य से, **श्रेयान्**=बढ़कर है।

अतएव..... विनीत वस्तेर्मम। सत्यानुयायियुक्तायाः=सत्य के अनुयायियों से, **युक्त मम**=मेरे विनीत, **विनम्रवसतेः**=रहने योग्य, आश्रम का नाम**, मया**=मैंने, **सत्याग्रहाश्रम**=सत्याग्रहाश्रम रखा है।

इति सत्यादि..... सुबहून्

इति=इस प्रकार, **सत्यादिधर्माणाम्**=सत्यादि धर्मों के, **अमोघं**=अचूक, **अद्भुतं**=अद्भुत, **बलम्**=बल को, **वर्णयन्**=बताते हुए, **गुरुः**=गुरु ने, **सुबहून्**=बहुत से लोगों को, **व्रतानि ग्राहयामास**=सत्य आदि का व्रत ग्रहण करवाया।

आत्मवत्..... सहस्रशः आत्मवत्=अपने समान, **सर्वभूतानि**=सभी प्राणियों को देखने वाले इस महात्मा के, **गुणैः परवशीभूताः**=गुणों से, **परवश**=पराधीन होते हुए, **पदानुगाः**=पीछे चलने वाले, **सहस्रशः**=हजारों की संख्या में, **व्यवर्धन्त** = बढ़ने लगे।

प्रश्नाः

1. **निम्नलिखितवाक्येषु मञ्जूषातः क्रियापदानि चित्वा योजयत।**

   (क) महात्मा सबरमत्याः तीरे सत्याग्रहाश्रमः नामकं सदनं .....।

   (ख) मुनिः स्वबन्धूनां क्लेशान् ध्यायन् .....।

   (ग) सर्बबलेभ्यः ह्यपि सत्यबलम् एव .....।

   (घ) गुरुः सुबहून् व्रतानि .....।

   (ङ) अस्य पादानुगाः सहस्रशः .....।

   मञ्जूषा

   (ग्राहयामास, स्थापयामास, अतिरिच्यते, विराजते, वर्धन्ते)

2. विशेषणानि योजयत

(क) .....सत्याग्रहाश्रमः।

(ख) ..... हि स आश्रमः।

(ग) ..... मुनिः विराजते।

(घ) ..... अबलः श्रेयान्।

(ङ) ..... मम विनीतवसतेः नाम सत्याग्रहाश्रमः दत्तः।

(च) सत्यादिधर्माणाम् ..... बलं वर्णयन् व्रतानि ग्राहयामास।

3. महात्मागांधिनः कृते प्रयुक्तानि पञ्चविशेषणानि लिखत यथा=महात्मा

4. कर्तृपदानि योजयत

(क) ततः सबर्मत्याः तीरे ..... सदनं स्थापयामास।

(ख) स्वबन्धूनां क्लेशान् ध्यायन् ..... बुद्ध इव विराजते।

(ग) अतएव ..... मम वसतेः नाम सत्याग्रहाश्रमः इति दत्तवान्।

(घ) इति ..... सुबहून् व्रतानि ग्राह्यामास।

(ङ) ..... अस्य गुणैः परवशी भूताः सहस्रशः ..... व्यवर्धन्त।